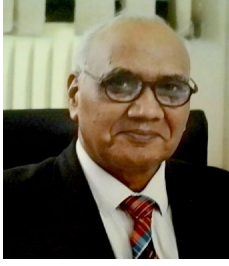


संक्षिप्त परिचय

प्रोफेसर (डॉ०) भरत राज सिंह,

महानिदेशक, 'स्कूल ऑफ मैनेजमेन्ट साइन्सेस, तकनीकी परिसर, लखनऊ'



डा० भरत राज सिंह का जन्म, 1947 में जनपद सुल्तानपुर के एक गाँव राईबीगों में हुआ था। इनकी स्कूली शिक्षा सुल्तानपुर व जौनपुर से हुई तथा इन्होंने बी० एस० सी० की डिग्री इलाहाबाद विश्वविद्यालय से 1967 में पूर्ण की। तदोपरान्त तकनीकी में ग्रेजुएट शिक्षा, यांत्रिक संवर्ग में 'सरदार बल्लभ रीजनल कालेज सूरत गुजरात' से 1972 में, पोस्ट ग्रेजुएट, यांत्रिक संवर्ग में 'मोतीलाल रीजनल कालेज इलाहाबाद' से 1988 में व पी०एच०डी० की उपाधि यांत्रिक संवर्ग में, गौतम बुद्ध तकनीकी विश्वविद्यालय, लखनऊ से 2011 में प्राप्त की।

डा० सिंह प्रारम्भ से ही 'विज्ञान व अन्वेषण' में प्रतिभावान ब्यक्तित्व के धनी छात्र रहे तथा इन्हें 1965 में प्रदेश के महामहिम श्री राज्यपाल द्वारा विज्ञान में अविष्कार हेतु अवार्ड, प्रदान किया गया था। इसके अतिरिक्त '1981 में वेस्ट-आफिसर' अवार्ड तथा 1994 में भूकम्प कार्य हेतु समाज श्री के राष्ट्रीय अवार्ड से मुम्बई में नवाजा गया। इन्हें वर्ष 2014 व 2015 में लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड में एअर-ओ-बाइक तथा अमेरिका में हाईस्कूल में अध्याय लागू होने तथा 2012 में अमेरिका की संस्था द्वारा लाईफ अचीवमेंट अवार्ड तथा 2016 में आब्जर्वर पीस अवार्ड से भी सम्मानित किया जा चुका है।

डा० सिंह का 45 वर्षों से अधिक का अनुभव प्रशासनिक व शिक्षा के क्षेत्र में रहा है, जिसमें 32 वर्ष तक भारत सरकार, प्रदेश सरकार के संस्थानों में अभियन्ता स्तर से प्रबन्ध निदेशक स्तर तक सेवारत रहे तथा सेवानिवृत्ति के उपरान्त शिक्षण में पिछले 13 वर्षों से प्रोफेसर, हेड, डीन, अतिरिक्त निदेशक विभिन्न स्तर पर तथा वर्तमान में निदेशक के पद पर 'स्कूल ऑफ मैनेजमेन्ट साइन्सेस, तकनीकी परिसर, लखनऊ' में कार्यरत हैं।

डा० सिंह नें प्रदेश की विभिन्न परियोजनाओं को नया आयाम दिया और 13-चीनी मिलों, 14-कताई मिलों, बी० एच० एल० जगदीशपुर व वाराणसी जैसी अत्यन्त महत्वपूर्ण व सयमवद्ध परियोजनाओं को समय से पूर्व, पूर्ण कराकर नया कीर्तिमान स्थापित किया।

शिक्षा जगत में, शुरु से अति 'सूक्ष्म एवं गहन' चिन्तक होने के कारण सेवानिवृत्ति के उपरान्त, पुनः अध्ययन प्रारम्भ किया और पिछले 12-13 वर्षों से विश्व स्तर पर पर्यावरण व वातावरण परिवर्तन की दिशा में अद्वितीय कार्य किया है।

पी० एच० डी० की उपाधि ही, इनके चतुर्थ पढाव का एक उदाहरण है। इन्होंने पर्यावरण की विश्वस्तरीय विभिषिका को कम करने हेतु हाईड्रोकार्बन ईंधन के स्थान पर 'हवा से संचालित इन्जन' का आविष्कार किया, जो इनके 2004 से 2010 तक के अथक प्रयास का फल है। इस प्रदूषण रहित इन्जन का छोटे वाहनो में उपयोग से 50-60% कार्बन-उत्सर्जन में कमी का आकलन किया गया है, जो विश्व व्यापी पर्यावरण विभिषिका को नयी दिशा देने में अग्रसर है।

इनके इस शोध की विश्व में अमेरिका, ब्राजील, कनाडा, जर्मनी, ईरान, ईराक, पाकिस्तान, चीन, ताइवान, बुल्गेरिया, थाईलैण्ड, कोरिया आदि देशो में न्यूज मीडिया, रेडियो, दूरदर्शन द्वारा पिछले दो-वर्षों से अत्यन्त चर्चा का विषय बना हुआ है तथा 'भारत सरकार के पेटेन्ट विभाग' द्वारा 13 अप्रैल 2012 को पेटेन्ट भी नोटीफाई हो गया है।

डा० सिंह के शोध के, लगभग 105 पेपर्स विश्व स्तर के प्रतिष्ठित जनरल, कान्फेरेन्स, सेमिनार की कार्य सूची में दर्ज हो चुका है। इनके द्वारा 6- किताबें तथा 9- किताबों में चैप्टर भी यू० के०, अमेरिका व क्रोशिया से प्रकाशित हो चुकी हैं।

डा० सिंह का विशिष्ट शोध कार्य क्षेत्र: पर्यावरण से सम्बन्धित एअर इन्जन, थर्मोडाइनेमिक्स, अप्राकृतिक मैनुफैक्चरिंग, अप्राकृतिक ऊर्जा व संरक्षण आदि है, जिस पर ये निरन्तर कार्यरत है। **पाताल लोक तथा रुद्राक्ष व तुलसी की माला में 108 - मनिकाओं के रहस्य की इनकी अध्ययन खोज है।**

डा० सिंह को विश्वस्तरीय प्रतिष्ठित लगभग 49- जनरल व शोध संस्थानों में 'सदस्य व सलाहकार सदस्य' भी नियुक्त कर रखा है, जिसमें ये निरन्तर योगदान दे रहे हैं। इनसे प्रतिष्ठित संस्थान एल्सवीयर के साइन्स डारेक्ट, आईमेक, यू० के०, अमेरिकन इन्स्टीट्यूट ऑफ फिजिक्स द्वारा निरन्तर शोध हेतु सलाह ली जा रही है।